①

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग,
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पाँच
व्याख्यान - III
मैथिली साहित्य इतिहास

चंदाझाक मिथिलाभाषा रामायण वैशिष्ट्य:-

कवीश्वरक ई मिथिलाभाषा रामायण सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ थिक। ई ग्रन्थ हिनका कालातीत बना देलक तथा हिनक कीर्तिध्वजके सदा फहरैत रहत। ई पुराण नहि, पौराणिक महाकाव्य थिक। एकर अद्यावधि पाँच संस्करण प्रकाशित भेल अछि। एकर पहिल संस्करण कवीश्वरक जीवनकालमे प्रकाशित भेल अछि। ई मुख्यतः अध्यात्म रामायणपर आधारित अछि। एहिमे कतहु-कतहु वाल्मीकि रामायण, आनन्द रामायण, रामचरितमानस, प्रसन्न राघव नाटक तथा हनुमानाटक पर आधारित कथा सेहो अछि।

रामायण सात काण्डमे बाँटल अछि। एक काण्डमे अनेक अध्याय छैक जे प्रायः धार्मिक भावनाकेँ पाठकवाक दृष्टिकोण देल गेल छैक। आरम्भमे संस्कृत श्लोकमे वन्दना अछि। सम्पूर्ण ग्रंथमे चौपाइ एवं दोहा छन्दक प्रधानता अछि,

Scanned by TapScanner

किन्तु बीच-बीचमे अनेकानेक छन्दक प्रयोग सेहो कयल गेल अछि।

डॉ० जयकान्त मिश्रक शब्दमे "रामायणक रचना कइ ओकरा प्रकाशमे आनि कवीश्वर से प्रतिष्ठा प्राप्त कयलन्हि जे विद्यापतिक पश्चात् मैथिलीक आन कोनो कविकेँ नहि भेटलन्हि। कवीश्वरक रामायणमे कल्पना-तत्व ततेक प्रबल नहि अछि जतेक बुद्धितत्व ओ विचारतत्व। कवित्वक दृष्टिएँ सर्वत्र ई अंश विच्छित्तिपूर्ण प्रतीत होइत अछि। जे कवीश्वरक मौलिक कृति थिक, जाहिमे श्री तँ मिथिलाक महिमा वर्णित अछि।"

मिथिला-महिमाक एक सुप्रसिद्ध पद द्रष्टव्य —

श्री क्षितिपभूमि मिथिला हम आबि गेलौं,।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौं,,
श्री दिव्य फूल-फल वृक्ष अनन्त धाम,
पक्षी विलक्षण करैं अछि रम्य गान।

Samjit Kumar

17/07/20